मृणाल पाण्डे के उपन्यासो में सामाजिक चेतना

Mranal Pandey Ke Upanyaso Mein Samajik Chetna

Reena Devi

Research Scholar, Singhania University, Rajasthan, India

----------♦----------

साहित्य और समाज का अटूट सम्बन्ध है। समाज में साहित्य की भूमिका केवल एक दर्पण की ही नहीं, अपितु उसे प्रगतिशील बनाने वाले सदा–सर्वदा निर्माता की भी है क्योंकि लोककल्याण को दृष्टि में रखकर ही रचनात्मक साहित्य लिखा जाता है जो समाज को अवनति से उन्नति की ओर ले जाता है।

साहित्यकार अपने युग और परिवेश से प्रभावित होकर ही साहित्य रचना करता है। साहित्यकार समकालीन सामाजिक परिस्थितियों के प्रति सदैव ही जागरूक होता है और समाज के तत्कालीन परिदृश्य को बिना लाग–लपेट के जो कुछ जैसा जहाँ

घटित हो रहा है, उसे ठीक वैसे ही यथार्थ के धरातल पर प्रस्तुत करता है। एक सपफल साहित्यकार वही होता है, जो व्यष्टि और समष्टि को समरूप मानकर अपने भावों को उजागर करता है और समाज को अनेक समस्याओं से अवगत कराकर उनके निवारण की युक्ति प्रस्तुत करता है, जिससे समाज में नवचेतना का संचार होता है।

मृणाल पाण्डे जी भी उन्हीं साहित्यकारों में से एक हैं, जिन्होंने ऐसे समय में लेखन कार्य आरम्भ किया है जब समाज में चारों ओर विषाद और विपाता व्याप्त है। मृणाल जी का व्यक्तित्व सौम्य व गरिमापूर्ण रहा है। वे मात्रा परम्परावादी नहीं है, अपितु वैज्ञानिक यथार्थवादी दृष्टिकोण से ओत–प्रोत हैं। मृणाल जी में सरलता, ईमानदारी, स्वाभिमानी आदि गुणों की झलक प्रथम दृष्टि में ही मिलती है। उनमें देश प्रेम, समाज सुधार का भाव व समाज में व्याप्त बुराइयों के प्रति आक्रोश स्पष्ट दिखाई देता है।

26 पफरवरी 1946 को मध्यप्रदेश के टीकमगढ़ में जन्मी मृणाल जी ने व्यवसाय के क्षेत्रा में अनेक स्तरों पर संघर्ष का सामना किया और इन संघर्षो पर विजय–पताका पफहराती हुई हमेशा आगे बढ़ी। उन्होंने पुरुष वर्चस्व वाले क्षेत्रा में पुरुषों के साथ खड़े होकर भावी महिला पीढ़ी के लिए भी आगे बढ़ने व अपने अस्तित्व को स्थापित करने के रास्ते खोल दिए हैं।

प्रत्येक साहित्यकार अपने पूर्व व अपने समकालीन वातावरण से प्रभावित होता है। इसलिए यह जानना अति आवश्यक है कि मृणाल जी से पहले व उनके समकालीन महिला उपन्यासकारों की क्या स्थिति एवं परिस्थितियाँ रही हैं। इसके लिए स्वाधीनता पूर्व महिला उपन्यासकार जैसे ऊषादेवी मित्रा, कंचनलता सब्बरवाल, कमलापुरी, कमलेश सक्सेना, प्रकाशवती आदि व स्वतंत्रयोत्तर महिला उपन्यासकार जैसे शिवानी जी, कृष्णा सोबती, रजनी पनिकर, मनु भण्डारी, ऊषा प्रियम्वदा, मालती जोशी, राजी सेठ आदि का अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है।

मनुष्य समाज की सबसे छोटी ईकाई है। समाज को विकसित करने में महत्त्वूपर्ण भूमिका निभाती है–मानवीय चेतना। मानव की चेतना उसे केवल उसके परिवेश को समझने की ही शक्ति प्रदान नहीं करती बल्कि अतीत व भविष्य के बीच मूल्यांकन करने की क्षमता भी प्रदान करती है। समाज में जब कोई नई विचारधारा किसी लक्ष्य को लेकर आती है तो समाज में उसके कारण जागृति आती है तो उसे ही सामाजिक चेतना कहते हैं।

सामाजिक चेतना समाज के शुभ–अशुभ, सत्य–असत्य तथा तत्कालीन राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, दार्शनिक

और वैज्ञानिक प्रवृत्तियों को जानने की शक्ति है। यह सत्य है कि सामाजिक चेतना के अभाव में साहित्य समाज का उचित दिशा–निर्देशन नहीं कर सकता। यदि साहित्य चेतना के अभाव में निष्प्राण है तो सामाजिक चेतना के बिना, दृष्टिहीन, जो न तो वर्तमान के विषय में ही कह सकता है और न ही भविष्य का मार्ग प्रशस्त कर सकता है।

मृणाल जी के उपन्यास साहित्य में सामाजिक चेतना के प्रत्येक पक्ष को समाहित किया गया है। जीवन के सभी पक्षों का सजीव चित्राण जितना उपन्यास कर सकता है उतना साहित्य की कोई अन्य विधा नहीं कर सकती।

समाज परिवार से बनता है। मुख्यतः भारतीय संस्कृति में संयुक्त परिवार–प्रणाली रही है। आज निजी स्वार्थों की पूर्ति व आधुनिकता की अंधी दौड़ में शामिल होने के कारण संयुक्त परिवार बड़ी शीघ्रता से टूट रहे हैं और एकल परिवारों में परिवर्तित होते जा रहे हैं। परिवार विवाह से बनता है। सामाजिक, नैतिक तथा धार्मिक विकास के लिए विवाह एक अत्यन्त पवित्रा कार्य है, जो न केवल दैहिक है बल्कि आत्मिक है, निःस्वार्थ तथा निश्छल है। वर्तमान में विवाह का स्वरूप बदल रहा है। आजकल अधिकांशतः अन्तर्जातीय विवाह, प्रेम विवाह तथा अदालती विवाह भी देखने को मिलते हैं। अन्तर्देशीय विवाह का प्रचलन भी बढ़ रहा है।

पति को परमेश्वर मानने वाली नारी आज समानता का दावा करती है। वर्तमान समाज में नारी विविध–रूपों में मौजूद है। आज भी समाज में ऐसी नारी है जो केवल अपने कर्त्तव्य को जानती है और अपने अधिकारों के बारे में उसे अहसास तक नहीं है। जिसके कारण वह पूर्ण शोषिता है। दूसरी ऐसी है जो अपने अधिकार भी जानती है और कर्त्तव्य भी। दोनों में सामंजस्य रखते हुए जीवन जीती है वह पारम्परिक है। तीसरी वह है जो केवल अपने अधिकारों को पहचानती और समाज की व्यवस्था के प्रति आक्रोश व्यक्त करते हुए विद्रोह करती है। उसकी इस मानसिकता के पीछे सम्पूर्ण समाज–व्यवस्था जिम्मेदार है। वर्तमान में व्यक्ति के मानसिक विकास के लिए आवश्यक तत्त्व शिक्षा का स्वरूप भी बदल रहा है। उस पर भी पाश्चात्य प्रभाव बढ़ता जा रहा है, जिसके कारण भारतीय संस्कृति अपना अस्तित्व खो रही है। यही कारण है कि हमारा समाज दिन प्रति दिन विभिा समस्याओं का समाधान करने की अपेक्षा उनमें घिरता जा रहा है। युवा वर्ग चाहकर भी 'जाति भेद' को पूरी तरह से मिटा नहीं पा रहा है। वर्तमान में लिंग भेद समाज की बड़ी समस्या बना हुआ है। 21वीं सदी में पहुंचने के बाद भी। समाज बेटियों को प्यार व संस्कार तो देना चाहता है अधिकार नहीं। आज भी बेटे की ही कामना की जाती है। दहेज रूपी रावण भी अपनी शक्ति को दिनोंदिन बढ़ाता ही जा रही है। अनमेल विवाह, बहु विवाह व बाल विवाह जैसी समस्या आज भी समाज के विकास में बाधक बनी हुई हैं। 'बेरोजगारी' व 'शराब' आदि भी युवा पीढ़ी को भटकाव की स्थिति में ले जा रहे हैं।

हमारे नैतिक मूल्य भी वर्तमान में पाश्चात्य प्रभाव के कारण ढीले पड़ते जा रहे हैं। एकल परिवारों के कारण बुजुर्गों को एकाकी जीवन जीना पड़ रहा है। नई पीढ़ी व पुरानी पीढ़ी में विचारों के मतभेद के कारण मानसिक द्वन्द्व की स्थिति पैदा हो रही है।

हमारे समाज की वर्तमान स्थिति के लिए यहाँ की राजनीतिक परिस्थितियाँ भी जिम्मेदार हैं। लम्बे समय तक निरंकुश राजतंत्रा की मनमानी, उसके बाद विभिन्न बाहरी आक्रमण व बाहरी लोगों का शोषण व अत्याचार पूर्ण शासन को सहन करने के बाद जब देश में जनतंत्रा की स्थापना हुई तो लोगों को कुछ बदलाव की उम्मीद थी, किन्तु हुआ इसके विपरीत। वर्तमान में राजनीतिज्ञ कुशल राजनेता का मुखौटा लगाकर अपने स्वार्थ की पूर्ति कर रहे हैं। जनता यह जानती है कि उनके निर्वाचन के समय दिए गए भाषण भी झूठे हैं और आश्वासन भी। परन्तु जनता के पास स्थिति में बदलाव लाने का दूसरा कोई रास्ता भी नहीं है। ये अपने लाभ के लिए समाज में विभिन्न प्रकार के साम्प्रदायिक दंगे करवाते हैं और समाज कल्याण के लिए आया पैसा अपने स्वार्थों की पूर्ति पर खर्च करते हैं।

वर्तमान आर्थिक परिदृश्य ने मनुष्य के जीवन को बदल दिया है, जिसका सीधा प्रभाव समाज पर पड़ता है। अर्थ की कमी के कारण पारिवारिक रिश्तों में तनाव आ गया है। पहले आपसी सम्बन्धों का निर्धारण नैतिक मूल्यों के आधार पर होता था परन्तु आज हर संबंध केवल अर्थ पर आधारित है। भारतीय समाज का बड़ा हिस्सा आज भी कृषि पर आधारित आजीविका पर निर्भर है। इसके अलावा धनार्जन के अन्य साधन भी लोगों ने अपनाए हैं। अर्थ

की समस्या के कारण ही युवाओं का लगातार विदेशों की ओर पलायन बढ़ रहा है।

भारतीय सभ्यता व संस्कृति में 'धर्म' का मानव जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान है। धर्म व्यक्ति को समाज में समाज के नियमों के साथ जीना सिखाता है। भारतीय समाज पूर्णतयः धार्मिक आस्था पर टिका हुआ समाज है। उसमें विभिन्न देवी–देवताओं और ईष्ट देवों की पूजा का विधान है। गरीबी, अज्ञानता के कारण समाज में तन्त्रा–मंत्रा व टोटके भी प्रचलित है और आधुनिक समय में भी समाज विभिन्न प्रकार के अंधविश्वासों के साथ जीता है। ईश्वर में अटूट विश्वास व श्र(ा के कारण ही आज भी वह मन्नत, मनौतियों पर विश्वास करता है और कामना पूरी होने पर भगवान के सामने मांगी मनौती पूरी भी करता है।

प्रत्येक समाज की अपनी संस्कृति व सभ्यता होती है। भारतीय संस्कृति की भी अपनी अलग पहचान है उसमें प्रचलित विभिन्न रीति–रिवाज व परम्पराएँ विशेष हैं। भारतीय समाज में शादी, सगाई, नामकरण, मुंडन, श्रा(आदि की विभिन्न रीति व परम्पराएँ प्रचलित हैं। लोकगीत व त्यौहारों की भी अपनी विशेषता है। किन्तु वर्तमान समय बदल रहा है। सारी सामाजिक व्यवस्था धन पर आधारित होती जा रही है। स्वर्ग की प्राप्ति तक के लिए मृत्यु समय में दान देने की परम्परा है जबकि वह व्यक्ति दिन भर का भोजन तक भी न जुटा पाने में असमर्थ होता है तो भी उसके लिए कुछ क्रियाएँ निश्चित हैं। एक तरपफ तो व्यक्ति इन परम्पराओं में पूरी तरह डूबा हुआ है। दूसरी ओर पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण आज का युवा वर्ग इन संस्कारों को ढकोसला मानता है और परिवारिक रिश्तों के साथ भी खिलवाड़ करता है। वहीं विदेशों में भारतीय संस्कृति के प्रति आकर्षण बढ़ रहा है। इस प्रकार मृणाल जी के उपन्यासों में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक व सांस्कृतिक मूल्यों के उत्थान व पतन का यथार्थ चित्राण किया गया है।

मृणाल जी की शिल्प–संरचना भी सामाजिक चेतना को ही अभिव्यक्त करती नजर आती है। उन्होंने शिल्प–संरचना में पूरा ध्यान रखा है कि वह लोक जन–जीवन से ऊपर का साहित्य न बन जाए। वे सदैव की समाज से जुड़कर चलती नजर आई है। उन्होंने लोक कथात्मक भाषा का प्रयोग किया है और उनके प्रतीक व बिम्ब भी सामाजिक चेतना से अछूते नहीं हैं। उनकी भाषा में भी आंचलिक व देशज शब्दों का प्रयोग किया गया है, जो उनकी भाषा को समाज के अधिक निकट ले आता है। उनके शिल्प के सभी बिन्दुओं पर यदि ध्यान दें तो वे सभी कहीं–न–कहीं समाज से जुड़ी उनकी गहरी चेतना को ही व्यक्त करते नजर आते हैं।

अतः स्पष्ट है कि मृणाल जी का उपन्यास साहित्य पूर्णतय समाज से जुड़ा साहित्य है। उसमें समाज के प्रत्येक पक्ष को उजागर किया गया है। सामाजिक चेतना के सभी आयाम जैसे–राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक व सांस्कृतिक सभी का यथार्थ चित्राण उनके उपन्यासों में मिलता है। यथार्थ को इतने करीब से जानने में उनकी साहित्यकार रूप में संवेदनशीलता व पत्राकार रूप में समाज के प्रति जागरूकता दोनों का सामंजस्य ही काम आया है।

प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध मे मृणाल पाण्डे जी द्वारा रचित उपन्यासों में सामाजिक–चेतना के विविध रूपों पर प्रकाश डाला जाएगा जिसमें प्रथम अध्याय हिन्दी उपन्यास का सै(ान्तिक परिचय देने के पश्चात् द्वितीय अध्याय में मृणाल पाण्डे जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विस्तृत प्रकाश डाला जाएगा। शोध–प्रबन्ध के तृतीय अध्याय में सामाजिक चेतना के स्वरूप एवं आयाम की विस्तृत चर्चा की जाएगी। चतुर्थ अध्याय मृणाल पाण्डे के उपन्यासों में सामाजिक–चेतना विषय से संबंधित होगा जिसमें मृणाल पाण्डे जी द्वारा रचित उपन्यासों में सामाजिक चेतना से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला जाएगा। इसी प्रकार शोध–प्रबन्ध के पंचम अध्याय में मृणाल पाण्डे जी द्वारा रचित सामाजिक चेतना से युक्त उपन्यासों के शिल्प तत्त्वों का वर्णन किया जाएगा। षष्ठ अध्याय 'उपसंहार' होगा। इसमें सम्पूर्ण शोधकार्य का साररूप प्रस्तुत किया जाएगा।

शोध–प्रबन्ध के अंत में संदर्भ ग्रंथ–सूची के अंतर्गत शोधकार्य में प्रयुक्त आधर–ग्रंथ,

सहायक–ग्रंथ,

- मृणाल पाण्डे पटरंगपुर पुराण राधकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली–110002, तीसरा सं. 2010
- मृणाल पाण्डे देवी राधकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली–110002, दूसरा सं. 2007

- मृणाल पाण्डे हमका दिया परदेस राधकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड जी–17, जगतपुरी, दिल्ली–110009, पहला सं. 2001
- मृणाल पाण्डे अपनी गवाही राधकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, जी–17, जगतपुरी, दिल्ली–1100091, पहला सं. 2003
- मृणाल पाण्डे रास्तों पर भटकते हुए राधकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, जी–17, जगतपुरी, दिल्ली–1100091, पहला सं. 2000
- मृणाल पाण्डे एक नीच ट्रेजडी राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, सं. 1989
- मृणाल पाण्डे शब्दबेधी राजकमल प्रकाशन, अंसारी रोड, दरियागंज, दिल्ली
- मृणाल पाण्डे दरम्यान पराग प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम सं. 1977
- मृणाल पाण्डे एक स्त्री का विदा गीत राधकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि. 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, 110002
- मृणाल पाण्डे चार दिन की जवानी तेरी राधकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि. 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, 110002, प्रथम संस्करण 1995
- मृणाल पाण्डे यानी की एक बात थी राधकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि., नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1990
- मृणाल पाण्डे काजर की कोठरी राजकमल प्रकाशन, अंसारी रोड, दरियागंज, दिल्ली, संस्करण 2009
- मृणाल पाण्डे चोर निकल कर भागा राधकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि. 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण–1971
- मृणाल पाण्डे परिधि पर स्त्री राधकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि. 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज नई दिल्ली, सं. 1998